अंतरा-शब्दशक्ति

ओस सी ज़िन्दगी

काव्य संग्रह

नीरजा मेहता "कमलिनी"

ओस सी ज़िन्दगी

(काव्य संग्रह)

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-81-937811-7-3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८©नीरजा मेहता 'कमलिनी'
मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण: मृदुल जोशी
मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

'Os si jindgi' (kavya-sangrah) by Neerja Mehta 'kamlini'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

ओस सी ज़िन्दगी

प्रिय पाठकों,

ज़िन्दगी, जो हमें बहुत लम्बी नज़र आती है, असल में बहुत छोटी होती है। आभास ही नहीं होता और हम उम्र के पड़ाव पार करते हुए जीवन के उस छोर पर आ जाते हैं जहाँ से हमको सब फिसलता नज़र आता है। देखा जाए तो ज़िन्दगी पत्ते पर पड़ी उस ओस जैसी है जहाँ वो कुछ पल ही ठहरती है और अपने निशान छोड़ धरती में समा जाती है। धीरे-धीरे वो निशान भी सूख जाते हैं किन्तु पत्ते को उसकी नमी से जो हरियाली मिलती है वो उसके लिए जीवन दान सी होती है। उसी तरह मनुष्य अपने कर्मों के निशान छोड़ दुनिया से चला जाता है और वही कर्म उसकी पूँजी होते हैं।

आज जीवन के ढलते पड़ाव पर मुझे एहसास हो रहा है कि बिन कुछ कहे ज़िन्दगी फिसलती जा रही है। जीना चाहती हूँ, कई कर्म अभी शेष हैं पर ज़िन्दगी, वो तो ओस के समान है, ठहर नहीं पा रही और लगता है बहुत कुछ पीछे छूटता जा रहा है। कभी सोचती हूँ कि परिवर्तन ही जीवन है, जो समय बीत गया वापस नहीं आएगा इसलिए जी भरकर जीना ही ज़िन्दगी है।

इस पुस्तक की रचनाओं में यही बताने का प्रयास किया है कि ये सांसों के व्यापार का सफ़र पानी के बुलबुले सा है, कब फूट जाए नहीं कह सकते। नदी के एक छोर से आरंभ हुआ उसके दूसरे छोर पर जाकर समाप्त हुआ जीवन एक पहेली सा प्रतीत होता है किन्तु फिर भी पत्ते पर पड़ी ओस की तरह मंझधार में रुकती, ठहरती फिर गिरती ज़िन्दगी ही हमारे जीवन का कटु सत्य है।

"वो देखो फिसल रही है
ओस की बूँद सी चमक रही है
दे भीनी सुगन्ध माटी से
माटी में मिल रही है।"

आपके स्नेह व आशीर्वाद की आकांक्षिणी
नीरजा मेहता 'कमलिनी'

अनुक्रमणिका

1. ओस सी ज़िन्दगी 5

2. पानी का बुलबुला है जीवन 6

3. एक बूँद हूँ लघु सी 7

4. जीवन एक नदिया है 8

5. कल ही की बात है 9

6. सांसों का व्यापार 10

7. बिंदास दिल 11

8. ज़िन्दगी एक पहेली 12

9. एक दिन की ज़िंदगी 13

10. कटु सत्य 14

11. सफ़र ज़िन्दगी का 15

12. पुनरावृत्ति 16

ओस सी ज़िन्दगी

वो देखो फिसल रही है
ओस की बूँद सी चमक रही है
दे भीनी सुगन्ध माटी से
माटी में मिल रही है।

कभी दमकती थी
जो मोती की लड़ियों सी
कभी छुप जाती थी
पर्णों में लिपटी सी
आज देखो बुलबुले सी
फटने को है भरी सी।

जो ठहरी नयन कोरों पर
लुढ़कने को है रुकी सी
जब ज़रा पलक झपकी जो
बह जाएगी ज़िन्दगी सी।

कभी माथे पर चमकती
कभी केशों से टपकती
हरी दूब पर ठहरती
ज़िन्दगी ओस सी है दिखती।

है ज़िन्दगी ये ओस सी
कण-कण से फिसल रही है
दे भीनी सगन्ध माटी से
माटी में मिल रही है।

पानी का बुलबुला है जीवन

एक बिंदु से प्रारंभ हुआ
चक्रव्यूह सदृश
अपने चारों ओर घेरा बनाता
उसमें जीवन के
हर रंग देखता मानव
ये समझ जाता
इसी घेरे में जीवन की
क्षणभंगुरता है।

वक़्त के दरिया पर
आती-जाती श्वासों समान
ये जीवन
कभी बहता
कभी डूब जाता
कभी ठहरता
कभी एक फूँक से
खो सा जाता।

इसी क्रम में विलीन हुआ
जीवन रूपी बीज
पुनः नई मौजों में उभरता
अविनाशी आत्मा सा
दशमलव के इर्द गिर्द घूमता
पानी का बुलबुला है जीवन।

एक बूँद हूँ लघु सी

तूणीर की इषु सी
मैं एक बूँद हूँ लघु सी।

पर्णों से मैं फिसलती
तृणों पे मैं चमकती
हूँ शुष्क में नमी
मृतप्राण में अमी
मरुस्थल में ज्यों तरु सी
मैं एक बूँद हूँ लघु सी।

आँखों में मैं छलकती
कोरों पे मैं सिमटती
पलकों की छांव में रुकी
घन की ओट में छुपी
न समझ मुझे मरु सी
मैं एक बूँद हूँ लघु सी।

टप-टप सी मैं बरसती
भू की तिश्नगी बुझाती
हूँ मोती की मैं लड़ी
सीपी में जा छुपी
अल्पता में हूँ गुरु सी
मैं एक बूँद हूँ लघु सी।

संग वारिद मैं बहती
घनप्रिया सी मैं चमकती
मुख पर छींट सी द्युति
शबनम सी हूँ दीप्ति
सागर में मैं चरु सी
मैं एक बूँद हूँ लघु सी।

जीवन एक नदिया है

जीवन में कभी उठतीं
कभी शांत हो जातीं
तरंगों सी उमंगें हैं,
कभी बहता कभी स्थिर हो जाता
भावों सा बहाव है,

कभी जागृत इच्छाओं सा
उफ़नता आब है,
कभी मन में
कलकल ध्वनि करता
प्रेममय मधुर संगीत है,

कभी मन ही मन जूझता
गिरते जलप्रपात सा
शोर है,
कभी वारि के बुलबुलों सा
विचारों का घेरा है,

कभी किनारे को तोड़
बाहर आने को आतुर
जल सा जज़्बा है,
कभी व्योम से मिलने की
क्षितिज सी मृगतृष्णा है,

कहीं थिरकती मचलती
अल्हड़ युवती सी बहती नदी है
तो कहीं कूल पर
शांत सलिल सा
ढलती उम्र का ठहराव है,

तट को छोड़ता हुआ
शुष्क माटी सा
मानों जीवन का अंत है
तो प्रतिदिन नव जल सा
मानों जीवन का शुभारम्भ है,

जीवन एक नदिया है
निराशा को आशा में बदलता
आशा को विश्वास में बदलता
जीवंतता दिखाता
ज्यों नवजीवन का आगाज़ है।

कल ही की बात है

लगता है कल ही की बात है
जब मैं माँ की गोद में
इठलाती इतराती मचल जाती थी
और माँ मेरे माथे को चूम
अंक में भर लेती थी।

लगता है कल ही की बात है
जब विद्यालय के
कक्षाकार्य और गृहकार्य के मध्य
सखियों के संग
कभी गुड़ियों की शादी रचाती
कभी छुपन छुपाई, स्टापू,
जैसे खेलों में मस्त हो जाती थी
और बिना टेंशन के परीक्षा दे आती थी।

लगता है कल ही की बात है
जब जवानी की दहलीज़ पर
पहला कदम रखा था,
आईने के सामने घण्टों खुद को निहारती
सजती संवरती और पास में
किसी के होने के एहसास मात्र से
शरमा जाती थी।

लगता है कल ही की बात है
जब चाह थी एक नई उड़ान की
कुछ कर गुज़रने की,
याद है आज भी
जब परीक्षा के दिनों में
पूरी रात जागती थी
और परिणाम की टेंशन में
भूख उड़ जाती थी।

लगता है
कल ही की बात है
जब सात फेरों में बंधकर
कुमकुम पैरों से
गृह प्रवेश किया था
और यहीं पत्नी से
माँ तक का
सफ़र तय किया।

विस्मित रह जाती हूँ देख
जीवन का ये सफ़र
इतनी जल्दी पूरा हो रहा है
विद्यालय से सेवानिवृत्ति
और घर की जिम्मेदारियों से भी मुक्ति।
इकसठ बसन्त पूरे हो चुके
पर मन आज भी बच्चा है

जीवन के उतरते पड़ाव में
अब भी पहले से
एहसास जिंदा हैं
पहले सा बचपना शेष है,
इकसठ (61) की उम्र में भी
सोलह (16) सा एहसास है
शायद इसीलिए लगता है
कल ही की बात है।

सांसों का व्यापार

हे प्रभु !
ये अच्छा मज़ाक किया तुमने,
चंद सांसों का लालच देकर
भेज दिया धरती पर,
स्वर्ग में मेरी आत्मा
सुखद विचरण कर रही थी,
धरती के झमेले से दूर
स्वर्गीय सुख का
आनन्द ले रही थी,
ये तुमसे देखा न गया,
तुमने आत्मा पर
शरीर रूपी कवच पहनाया
और दहेज में दुनिया भर के
झूठे रिश्ते, स्वार्थी मित्र
धोखेबाज़ पड़ोसी, कठिनाईयों के पहाड़
देकर स्वर्ग से विदाई दे दी,
सिर्फ एक रिश्ता सच्चा मिला
जिसको मैंने माँ रूप में देखा,
उसको भी मुझसे छीन लिया,
हे प्रभु !
ज़िन्दगी दी तुमने
वो भी ओस जैसी
जो चंद पल में ही फिसल गई,
अच्छा व्यापार किया
सांसों का तुमने।

बिंदास दिल

दिल बड़ा बिंदास है
दिमाग़ से है उसका सीधा नाता
मानव पर रहता है हावी
मस्तिष्क में चल रहे
एहसासों को खुद जीता है,
सुख-दुःख, चिंता, कष्ट
खुशी, ग़म, निराशा
सब कुछ खुद झेलता है
फिर भी बिंदास जीता है,
मन में हिलोरें ले रही
कल्पनायें, अभिलाषाएं,
आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ सब दिल की हैं,
किसी से जुड़ता है तो
बल्लियों उछलता है,
कोई तोड़ता है तो
टूट कर भी अटूट रहता है,
खुद सदा अल्हड़ युवती सा
खिला-खिला मस्त रहता है
और अपनी उम्र की छाया
शरीर पर छोड़ देता है,
आईना भी
खूबसूरती का ज़ायका नहीं लेने देता
लटकती त्वचा पर
ठहाके लगाता है
और मुँह छुपाने पर
मजबूर कर देता है,
भले ही चेहरा झुर्रियों से भर गया हो
ओस से फिसल गया हो
पर मुआ दिल, उस पर
उम्र का कोई तकाज़ा नहीं है
सचमुच दिल बड़ा बिंदास है।

ज़िन्दगी एक पहेली

ज़िन्दगी
आदि से अंत तक
शाश्वत किन्तु क्षणिक
विस्तृत किन्तु संक्षिप्त

विचित्र किन्तु सत्य
अलबेली किन्तु नित्य
चिर परिचित किन्तु अकाल्पनिक
रहस्यमयी किन्तु दिलचस्प

विस्मयकारी किन्तु प्रभावकारी
अभिशापित किन्तु अलौकिक वरदान सी
उलझी डोर सी किन्तु
सपनों को साकार करती सी

प्रवाहमयी अद्भुत अभिव्यक्ति सी
भावानुकूल सुसंस्कृत आदर्शमयी
कविता की समीक्षा सी,
चक्रव्यूह समान

मानो हो
एक अनबूझी
अनसुलझी
पहेली।

एक दिन की ज़िंदगी

आज कुछ छटपटाहट है
मन में कुछ घुटन का एहसास है
कुछ छूटता सा प्रतीत हो रहा है
कुछ ख़ालीपन सा लग रहा है,
शायद प्राण बाहर आने को आतुर हैं
कुछ काले साये से दृष्टिगोचर हैं
सांसें थमने को हैं
और आँखें बंद होने को हैं।

देख रही हूँ
मृत्यु शैया पर पड़ी मैं
मुक्ति पथ पर अग्रसर हूँ
भीड़ में भी एकांत का एहसास है,
इसी एकांत में मन मांग रहा है
कर्मों का लेखा जोखा,
याद आया मुझे
कितनों का दिल दुखाया
कितनों को अपशब्द कहे
कितनों को पीछे छोड़ दिया
कितनों को त्याग दिया।

काश, मिल जाता कुछ वक़्त
मांग लेती क्षमा
कर लेती मनुहार
लौटा देती वो चाँदनी
भर देती उदास पलों में खुशियाँ
खिला देती सूखी बगिया में पुष्प
पर ये क्या ?
ज़िन्दगी तो ओस की तरह फिसल गई,
न जाने क्यों ज़िन्दगी का
बुझा हुआ दीया जलने को आतुर है
पर जानती हूँ नहीं मिलेगी
वो एक दिन की ज़िन्दगी।

कटु सत्य

मैं मृत्यु हूँ, मैं एकांत हूँ
रुदन में भी सन्नाटा फैलाता हूँ,
मुझसे ही जीवन का अवसान है,
जीवन का मैं परिवर्तित रूप भी हूँ,
गहन अन्धकारमय कूप भी हूँ,
सामान्य प्राणी से सृष्टि के रचियता तक
मैं सबका काल भी हूँ,
कड़वी औषधि सदृश
सब मेरा सामना करने से घबराते,
मैं निश्चित हूँ,
तिमिर के बाद का उजाला भी मैं ही हूँ,
मुझसे ही नवजीवन है।
प्राणी मुझसे अनभिज्ञ
खिलखिलाते, गुनगुनाते, मस्त रहते
जीवन को वरदान समझते
किन्तु जीवन के अर्धसत्य को पहचान न पाते,
क्षणभंगुर जीवन के बीच का फ़ासला
ठहरी हुई ओस सा अज्ञानता में गुज़रता।
जीवन क्षणभंगुर है
इस कटु सत्य को
जीवन में लोग उतार नहीं पाते,
इस सत्यता से मुख छुपाना चाहते
जानते हैं क्यों ?
क्योंकि मृत्यु उनको भीरु बनाता है,
भूल जाते वो कि मृत्यु
उनके जीवन को शिव सा सजाता है,
और सत्य से पहचान कराता है
और अविनाशी आत्मा को
इस तत्व से उस तत्व में विलीन करता है।

सफ़र ज़िन्दगी का

पर्णों में लिपटी ओस सी ज़िन्दगी
जब ठहरती है तो
इसमें मिलती
काँटों की चुभन
प्रसनों की महक
अद्भुत मिठास
निराली कड़वाहट
रिश्तों का बंधन
भक्ति का चंदन
प्रेम की पवित्रता
अंतस की मधुरता
मिलन का आनन्द
बिछड़ने का गम
पाने की आकांक्षा
खोने का भय
अंतहीन दुर्लभ मार्ग
सुगम होती उलझनें
माया की चाहत
मन में रहती आहट
धूप छांव जैसे रंग
कल्पनाओं के संग
है ये सपनों की दुनिया
इन सबके बीच
जब ज़िन्दगी
ओस सदृश फिसलती है
ख़त्म होती है, तो लगता है
मानों सफ़र ज़िन्दगी का
है एक चुनौती।

पुनरावृत्ति

आज बूढ़ी हो चुकी मेरी माँ
कुछ-कुछ बेटी सी
प्रतीत हो रही है,
कुछ पाने के लिए
कभी जिद कर बैठती है
और न मिलने पर
मुँह फुला रूठ जाती है,
मुझसे माँ सी ममता चाहती है
मेरी गोद में सर रख लोरी सुनना चाहती है,
अक्सर सहानुभूति पा
उसकी आँख भर आती है
आजकल वो मुझको
बिल्कुल बच्ची नज़र आती है,
उसकी सिकुड़ी त्वचा में
है कुछ कोमलता
बिन दाँतों वाले मुख में भी
है कुछ सजलता,
बुढ़ापे में दिख रहा भोला सा बचपन
शायद धीरे-धीरे छोड़ रहा
जीवन का अचकन,
ज़िन्दगी है ओस सी
पर्णों से फिसल रही
चाहूँ रोकना तब भी
माटी में मिल रही
मन ही मन सोच रही
कैसी हो रही आवृत्ति
बुढ़ापे में बचपन की कैसी हो रही पुनरावृत्ति।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- नीरजा मेहता 'कमलिनी'
जन्मतिथि	- 24 दिसम्बर 1956
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी व संस्कृत), बी.एड., एल.एल.बी.
निवास स्थान	- कौशम्बी गाज़ियाबाद (यू.पी.)
फोन नं.	- 9654258770
मेल आई.डी.	- mehta.neerja24@gmail.com
विधा	- छंदमुक्त, गीत, मुक्तक, हाइकू, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख आदि
प्रकाशित एकल पुस्तकें	(1) मन दर्पण (कविताएँ समीक्षा सहित) 2016 (2) नीरजा का आत्ममंथन (काव्य संग्रह) 2016 (3) उमंग (बाल काव्य संग्रह) 2017 (4) परछाइयाँ (संस्मरण) 2017 (5) सृजन समीक्षा (कविताएँ समीक्षा सहित) 2018 (6) खनक चूड़ियों की (काव्य संग्रह) 2018 (7) हाँ, मैं ऐसी ही हूँ (8) काश तुम समझ पाते (9) एक टुकड़ा धूप
प्रकाशित साक्षा संग्रह	(1) 35 साझा काव्य संग्रह (2) 4 साझा कहानी संग्रह (3) 2 साझा लघु कथा संग्रह (4) 1 साझा लेख संग्रह (5) 1 साझा समीक्षा संग्रह (6) 2 परिचय संग्रह
पत्र पत्रिकाएं	- 2008 से अब तक देश विदेश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं व ई-पत्रिकाओं में लगभग 500 से अधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं और निरन्तर प्रकाशित होती रहती है।
सम्मान	- साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए विभिन्न संस्थाओं/समूहों द्वारा 2015 से अब तक लगभग 50 बार प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह से सम्मानित।
जीवन का उद्देश्य	- कड़ी मेहनत, सच्ची लगन औन अनुशासन ही मेरी पूँजी है, साहित्य सेवा ही मेरा सपना है और सादगी ही मेरा जीवन है।

न छीन पाआगे कभी, बेवजह ये पहल है
ये ईंटों का नहीं, मेरे ख़्वाबों का महल है।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-81-937811-7-3

मूल्य- 40/-